B. Ed 2nd year (19-21) ①

<u>Sub:- EPC-4 (Understanding the self)</u>

⇒ <u>बहुअस्मिता की समझ</u>:- राजनैतिक विचारधाराएं और तर्क होते हैं जो किसी देश, राज्य या अन्य राजनैतिक इकाई के पूर्ण हित को छोड़कर उन समूहों के हितों को बढ़ावा देने पर बल दे जिसके लोग सदस्य हों। यह समूह जाति, धर्म, लिंग, विचारधारा, राष्ट्रीयता, संस्कृति, भाषा, इतिहास अन्य किसी लक्षण पर आधारित हो सकते हैं। काशी प्राचीन काल से हिन्दू संस्कृति का केन्द्र रही है। और पहले से भी हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों के लोग यहां आते रहे हैं। अब तो विभिन्न, धर्मों, समुदायों और नागरिकताओं के लोग आ रहे हैं। धर्म सभी अच्छे हैं, लेकिन इसका प्रयोग लोग कैसे करते हैं, सब कुछ इस पर निर्भर करता है। हिन्दु धर्म पूर्णतः बहुअस्मिता वाला धर्म है। इसमें सबकुछ समाहित भी है। और सबकी अलग पहचान भी है। हिन्दु धर्म में सबकी पहचान सुरक्षित है। किसी भी पहचान को किसी का कोई खतरा नहीं है।

प्रत्येक पहचान के प्रति हमारा सम्मान ही दूर तक चलने का प्रमाण है। हिन्दू संस्कृति विभिन्नताओं से बनी है। यहां प्रत्येक की अस्मिता को महत्व मिलता है।

⇒ व्यक्तित्व से क्या तात्पर्य है ?
What do you mean by Personality ?

"Personality" शब्द यूनानी भाषा के 'Persona' से बना है— जिसका अर्थ नकाब अथवा चेहरा-मुहरा है।

जी० डब्ल्यू. आलपोर्ट के अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।"

इस परिभाषा में व्यक्तित्व को गत्यात्मक संगठन के रूप में स्वीकार किया गया है। यह देखा गया है कि संसार की प्रत्येक वस्तु में कुछ-न-कुछ परिवर्तन होते रहते है। अतः कहा भी गया है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व स्थिर नहीं होता है। उसमें समय-समय पर वातावरण की अन्तःक्रियाओं के अनुसार परिवर्तन होते रहते है।

मनोदैहिक गुण अर्थात् मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार के गुण सम्मिलित है। यह देखा गया है कि वातावरण कि विभिन्न परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति का समायोजन उनके व्यक्तित्व के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है।

⇒ वारने के अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है, जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।"

⇒ सामाजिक अस्मिता के सिद्धान्तों का वर्णन करें ?

सामाजिक अस्मिता के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं जो आत्म की उत्पति को दर्शाते हैं —

1. कूले का सिद्धान्त (cooley's theory) :- इस सिद्धान्त को आत्म-दर्पण का सिद्धान्त भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अंतर्गत कूले कहते हैं कि समाज एक दर्पण के समान होता है। व्यक्ति अपने आप को वैसे ही बनता है जैसे समाज में वो जाता है। जिस प्रकार एक पुरुष अथवा महिला आईने में देखकर सजती, संवरती है और अपने आप को बार-बार निहारती है और देखते हैं कि वह ठीक उसी प्रकार से तैयार हो पायी है या नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस समाज में वे जा रही है उसके अनुरूप अपने को तैयार कर पायी है कि नहीं।

इसमें समाज एक दर्पण होता है जिससे व्यक्ति देखकर सीखता है। इसी को कूले ने आत्म दर्पण का सिद्धान्त कहा है।

2. मीड का सिद्धान्त (mead's theory) :- मीड ने आत्म के विकास के लिए 'मैं तथा मुझे' (I and me) जैसी अवधारणाओं का प्रतिपादन किया 'मैं' और 'मुझे' की अन्तःक्रिया के बीच स्व: का निर्माण होता है। एक बालक समाजीकरण के दौरान तीन अवस्थाओं से गुजरता है :—

⇒ नकल की अवस्था

⇒ नाटक की अवस्था

⇒ खेल की अवस्था

कूले के आत्म दर्पण सिद्धान्त पर अपना विचार आधारित करते हुए मीड ने 'मैं' और 'मुझे' की अवधारणा का प्रतिपादन किया। मीड के समाजीकरण के सिद्धान्त में 'मैं', 'मुझे' एवं 'स्व:' की अवधारणा का विशेष महत्व है। 'मुझे' का तात्पर्य समाज से है और 'मैं' का तात्पर्य समाज के प्रति उत्तर हूँ से है।

दूसरे लोग (समाज) मेरे बारे में क्या सोचते है, उस संदर्भ में 'मैं' क्या सोचता हूं, यह 'मैं' है और अंतत: मैं अपने बारे में जिस निष्कर्ष पर पहुंचता हू वह स्व: (self) है।

3. मर्फी का सिद्धान्त (murphy's theory):- मर्फी का नियम उन छोटी-छोटी घटनाओं के होने को परिभाषित करता है जो हमारे साथ रोजमर्रा के जीवन में घटती है। इनसे हमारा कोई खास नुकसान नहीं होता फिर भी इनका होना पसंद नहीं करते क्योंकि ये मुंझलाहट (गुस्सा) पैदा करती है।

यह नियम कहता है "अगर किसी चीज के गलत होने की थोड़ी सी भी संभावना है तो वह गलत होगी"। कहीं-कहीं इस नियम का संबंध 80-20 नियम से भी कहा गया है।

⇒ मर्फी नियम के उदाहरण- दो राशन की कतारे है जिसमें आप नहीं है वही तेज बढ़ती है।

80 फीसदी समस्या का कारण 20 फिसदी input है। जैसे- 80% complain 20% customer करते है।

⇒ मर्फी का एक ही नियम था कि किसी भी शक्ति स्त्रोत से जुड़ा हुआ रेडियो उसके सामर्थ्य क्षेत्र में आने वाले किसी भी रेडियो तरंगो को पकड़ कर आपको सुना सकता था।

4. मिलर का सिद्धान्त (Miller's theory) :- मिलर का सिद्धान्त भी कूले के सिद्धान्त के समान ही था। एक व्यक्ति के आत्म का विकास समाज में रहकर होता है। समाज के व्यक्ति जैसा उस व्यक्ति के बारे में बताते हैं, वह स्वयं को वैसा ही मानने लगता है। इसके अतिरिक्त एक व्यक्ति के समूह के अन्य व्यक्तियों से संबंध रखना चाहिए, क्योंकि एक व्यक्ति का जितने ही अधिक समूहों से संबंध रहता है उतने ही अधिक उनमें विकास होता है। इस प्रकार सामाजिक अन्तःक्रिया करते हुए वह विभिन्न प्रकार की सामाजिक भूमिकाओं का अधिगम करता है। इसके साथ ही व्यक्ति के आत्म का भी विकास होना प्रारम्भ हो जाता है।